IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 2, March 2023

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता एवं प्रासंगिकता

Gurmit Singh

Associate Professor in Hindi Department, Janki Devi Bajaj Govt. Girls College, Kota,

Rajasthan, India

सार

हरिशंकर परसाई (२२ अगस्त, १९२४ - १० अगस्त, १९९५) हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंगकार थे। उनका जन्म जमानी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ था। वे हिंदी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के–फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने–सामने खड़ा करती है, जिनसे किसी भी और राजनैतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को उन्होंने बहुत ही निकटता से पकड़ा है। सामाजिक पाखंड और रूढ़िवादी जीवन–मूल्यों के अलावा जीवन पर्यन्त विस्ल्लीयो पर भी अपनी अलग कोटिवार पहचान है। उड़ाते हुए उन्होंने सदैव विवेक और विज्ञान–सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा–शैली में खास किस्म का अपनापन महसूस होता है कि लेखक उसके सामने ही बैठे हें।ठिठुरता हुआ गणतंत्र की रचना हरिशंकर परसाई ने की जो एक व्यंग्य है| उन्होंने सेमस्तार ग्लोबल स्कूल इलाहाबाद में आर. टी.एम.नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम°ए° की उपाधि प्राप्त की।

परिचय

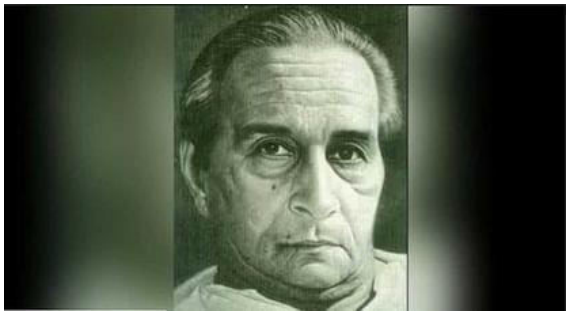

18 वर्ष की उम्र में वन विभाग में नौकरी की। खंडवा में ६ महीने अध्यापन। दो वर्ष (१९४१-४३) जबलपुर में स्पेस ट्रेनिंग कॉलेज में शिक्षण की उपाधि ली। 1942 में उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ी। 1943 से 1947 तक प्राइवेट स्कूलों में नौकरी। 1947 में नौकरी छोड़कर स्वतन्त्र लेखन की शुरूआत। जबलपुर से 'वसुधा' नाम की साहित्यिक मासिकी निकाली, नई दुनिया में 'सुनो भइ साधो', नयी कहानियों में 'पाँचवाँ कालम' और 'उलझी–उलझी' तथा कल्पना में 'और अन्त में' इत्यादि कहानियाँ, उपन्यास एवं निबन्ध–लेखन के बावजूद मुख्यत: व्यंग्यकार के रूप में विख्यात। परसाई मुख्यतः व्यंग -लेखक है, पर उनका व्यंग केवल मनोरजन के लिए नही है। उन्होंने अपने व्यंग के द्वारा बार-बार पाठको का ध्यान व्यक्ति और समाज की उन कमजोरियों और विसंगतियो की ओर आकृष्ट किया है जो हमारे जीवन को दूभर बना रही है। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं शोषण पर करारा व्यंग किया है जो हिन्दी व्यंग -साहित्य में अनूठा है। परसाई जी अपने लेखन को एक सामाजिक कर्म के रूप में परिभाषित करते है। उनकी मान्यता है कि सामाजिक अनुभव के बिना सच्चा और वास्तविक साहित्य लिखा ही नही जा सकता। परसाई जी मूलतः एक व्यंगकार है। सामाजिक विसंगतियो के प्रति गहरा सरोकार रखने वाला ही लेखक सच्चा व्यंगकार हो सकता है। परसाई जी सामायिक समय का रचनात्मक उपयोग करते है। उनका समूचा साहित्य वर्तमान से मुठभेड़ करता हुआ दिखाई

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

देता है। परसाई जी हिन्दी साहित्य में व्यंग विधा को एक नई पहचान दी और उसे एक अलग रूप प्रदान किया, इसके लिए हिन्दी साहित्य उनका ऋणी रहेगा। परसाई जबलपुर व रायपुर से प्रकाशित अखबार देशबंधु में पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देते थे। उनके कॉलम का नाम था - परसाई से पूछें। पहले पहल हल्के, इश्किया और फिल्मी सवाल पूछे जाते थे। धीरे-धीरे परसाई जी ने लोगों को गम्भीर सामाजिक-राजनैतिक प्रश्नों की ओर प्रवृत्त किया। दायरा अंतर्राष्ट्रीय हो गया। यह पहल लोगों को शिक्षित करने के लिए थी। लोग उनके सवाल-जवाब पढ़ने के लिये अखबार का इंतजार करते थे।

- कहानी–संग्रह: हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव।
- उपन्यास: रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, ज्वाला और जल।
- संस्मरण: तिरछी रेखाएँ।
- निबंध-संग्रह

पगडंडियों का जमाना(1966ई०),जैसे उनके दिन फिरे(1963ई०),सदाचार की ताबीज (1967ई०),शिकायत मुझे भी है(1970ई०), ठिठुरता हुआ गणतंत्र(1970ई०),अपनी-अपनी बीमारी (1972ई०),वैष्णव की फिसलन(1967 ई०),विकलांग श्रद्धा का दौर(1980ई०),भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, सुनो भाई साधो (1983ई०),तुलसीदास चंदन घिसे(1986ई०), कहत कबीर(1987ई०),हँसते हैं रोते हैं, तब की बात और थी, ऐसा भी सोचा जाता है(1993ई०), पाखण्ड का अध्यात्म(1998ई०),आवारा भीड़ के खतरे(1998ई०),प्रेमचंद के फटे जूते।

परसाई रचनावली (सजिल्द तथा पेपरबैक, छह खण्डों में; राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली से प्रकाशित)

- आँखन देखी - संपादक- कमला प्रसाद (वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली से प्रकाशित)
- देश के इस दौर में - विश्वनाथ त्रिपाठी (राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली से प्रकाशित) ।
- सुनो भाई साधो - हरिशंकर परसाई ।

विकलांग श्रद्धा का दौर के लिए १९८२ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित। हिंदी के मूर्धन्य व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी को पढ़ते हुए पाठक महसूस करता है कि इंसान का विवेक और वैज्ञानिक चेतना बहुत महत्वपूर्ण चीज़ें हैं जिसका इस्तेमाल कर चाहिए। वे रूढ़िवादी नज़रिये को सिरे से ख़ारिज करते थे। और ये सब वे इतने अपनेपन के साथ बयां करते थे कि पाठक के साथ बहुत नज़दीकी रिश्ता क़ायम हो जाता है। परसाई जी ने 10 अगस्त, 1995 को इस दुनिया को अलविदा कहा। हरिशंकर परसाई 22 अगस्त 1924 को मध्य प्रदेश में होशंगाबाद के जमानी में पैदा हुए। उनके कई व्यंग्य, निबंध संग्रह, उपन्यास, संस्मरण प्रकाशित हुए। इन व्यंग्य में पगडंडियों का जमाना, सदाचार का तावीज, वैष्णव की फिसलन, विकलांग श्रद्धा का दौर, प्रेमचंद के फटे जूते, ऐसा भी सोचा जाता है, तुलसीदास चंदन घिसैं चंद नाम हैं। परसाई जी साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' के संस्थापक और संपादक थे।

हरिशंकर परसाई हिंदी की वो मशहूर हस्ती हैं जिन्होंने अपनी लेखनी के दम पर व्यंग्य को एक विधा के तौर पर मान्यता दिलाई। उन्होंने अपने व्यंग लेखन से लोगों को गुदगुदाया और समाज के गंभीर सवालों को भी बहुत सहजता से उठाया। व्यंग्य लेखन से हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने और उनके बहुमूल्य योगदान के लिए उन्हें 1982 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विचार-विमर्श

पेश है हरिशंकर परसाई जी का एक दिलचस्प व्यंग्य : 'वो जो आदमी है न'
निंदा में विटामिन और प्रोटीन होते हैं। निंदा खून साफ करती है, पाचन-क्रिया ठीक करती है, बल और स्फूर्ति देती है। निंदा से मांसपेशियाँ पुष्ट होती हैं। निंदा पायरिया का तो शर्तिया इलाज है। संतों को परनिंदा की मनाही होती है, इसलिए वे स्वनिंदा करके स्वास्थ्य अच्छा रखते हैं। 'मौसम कौन कुटिल खल कामी'- यह संत की विनय और आत्मग्लानि नहीं है, टॉनिक है। संत बड़ा कांइयाँ होता है। हम समझते हैं, वह आत्मस्वीकृति कर रहा है, पर वास्तव में वह विटामिन और प्रोटीन खा रहा है।
स्वास्थ्य विज्ञान की एक मूल स्थापना तो मैंने कर दी। अब डॉक्टरों का कुल इतना काम बचा कि वे शोध करें कि किस तरह की निंदा में कौन से और कितने विटामिन होते हैं, कितना प्रोटीन होता है। मेरा अंदाज है, स्त्री संबंधी निंदा में प्रोटीन बड़ी मात्रा में होता है और शराब संबंधी निंदा में विटामिन बहुत होते हैं। मेरे सामने जो स्वस्थ सज्जन बैठे थे, वे कह रहे थे - आपको मालूम है, वह आदमी शराब पीता है? मैंने ध्यान नहीं दिया। उन्होंने फिर कहा - वह शराब पीता है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

निंदा में अगर उत्साह न दिखाओ तो करने वालों को जूता-सा लगता है। वे तीन बार बात कह चुके और मैं चुप रहा, तीन जूते उन्हें लग गए। अब मुझे दया आ गई। उनका चेहरा उतर गया था।
मैंने कहा - पीने दो।
वे चकित हुए। बोले - पीने दो, आप कहते हैं पीने दो?
मैंने कहा - हाँ, हम लोग न उसके बाप हैं, न शुभचिंतक। उसके पीने से अपना कोई नुकसान भी नहीं है।
उन्हें संतोष नहीं हुआ। वे उस बात को फिर-फिर रेतते रहे। तब मैंने लगातार उनसे कुछ सवाल कर डाले - आप चावल ज्यादा खाते हैं या रोटी? किस करवट सोते हैं? जूते में पहले दाहिना पाँव डालते हैं या बायाँ? स्त्री के साथ रोज संभोग करते हैं या कुछ अंतर देकर?
अब वे 'हीं-हीं' पर उतर आए। कहने लगे - ये तो प्राइवेट बातें हैं, इनसे क्या मतलब।
मैंने कहा - वह क्या खाता-पीता है, यह उसकी प्राइवेट बात है। मगर इससे आपको जरूर मतलब है। किसी दिन आप उसके रसोईघर में घुसकर पता लगा लेंगे कि कौन-सी दाल बनी है और सड़क पर खड़े होकर चिल्लाएँगे - वह बड़ा दुराचारी है। वह उड़द की दाल खाता है।
तनाव आ गया। मैं पोलाइट हो गया - छोड़ो यार, इस बात को। वेद में सोमरस की स्तुति में 60-62 मंत्र हैं। सोमरस को पिता और ईश्वर तक कहा गया है। कहते हैं - तुमने मुझे अमर बना दिया। यहाँ तक कहा है कि अब मैं पृथ्वी को अपनी हथेलियों में लेकर मसल सकता हूँ। (ऋषि को ज्यादा चढ़ गई होगी) चेतन को दबाकर राहत पाने या चेतना का विस्तार करने के लिए सब जातियों के ऋषि किसी मादक द्रव्य का उपयोग करते थे। "वे देश को पश्चिमी सभ्यता के सलाद संग खाते थे, ये जनतंत्र के अचार संग खाते हैं" चेतना का विस्तार। हाँ, कई की चेतना का विस्तार देख चुका हूँ। एक संपन्न सज्जन की चेतना का इतना विस्तार हो जाता है कि वे रिक्शेवाले को रास्ते में पान खिलाते हैं, सिगरेट पिलाते हैं, और फिर दुगने पैसे देते हैं। पीने के बाद वे 'प्रोलेतारियत' हो जाते हैं। कभी-कभी रिक्शेवाले को बिठाकर खुद रिक्शा चलाने लगते हैं। वे यों भी भले आदमी हैं।
पर कुछ मैंने ऐसे देखे हैं, जो होश में मानवीय हो ही नहीं सकते। मानवीयता उन पर रम के 'किक' की तरह चढ़ती-उतरती है। इन्हें मानवीयता के 'फिट' आते हैं - मिरगी की तरह। सुना है मिरगी जूता सुँघाने से उतर जाती है। इसका उल्टा भी होता है। किसी-किसी को जूता सुँघाने से मानवीयता का फिट भी आ जाता है। यह नुस्खा भी आजमाया हुआ है।
एक और चेतना का विस्तार मैंने देखा था। एक शाम रामविलास शर्मा के घर हम लोग बैठे थे (आगरा वाले रामविलास शर्मा नहीं। वे तो दुग्धपान करते हैं और प्रात: समय की वायु को 'सेवन करता सुजान' होते हैं)। यह रोडवेज के अपने कवि रामविलास शर्मा हैं। उनके एक सहयोगी की चेतना का विस्तार कुल डेढ़ पेग में हो गया और वे अंग्रेजी बोलने लगे।
कबीर ने कहा है - 'मन मस्त हुआ तब क्यों बोले'। यह क्यों नहीं कहा कि मन मस्त हुआ तब अंग्रेजी बोले। नीचे होटल से खाना उन्हीं को खाना था।
हमने कहा - अब इन्हें मत भेजो। ये अंग्रेजी बोलने लगे। पर उनकी चेतना का विस्तार जरा ज्यादा ही हो गया था। कहने कहने लगे - नो सर, नो सर, आई शैल ब्रिंग ब्यूटीफुल मुर्गा। 'अंग्रेजी' भाषा का कमाल देखिए। थोड़ी ही पढ़ी है, मगर खाने की चीज को खूबसूरत कह रहे हैं। जो भी खूबसूरत दिखा, उसे खा गए। यह भाषा रूप में भी स्वाद देखती है। रूप देखकर उल्लास नहीं होता, जीभ में पानी आने लगता है।
ऐसी भाषा साम्राज्यवाद के बड़े काम की होती है। कहा - इंडिया इज ए ब्यूटीफुल कंट्री। और छुरी-काँटे से इंडिया को खाने लगे। जब आधा खा चुके, तब देशी खानेवालों ने कहा, अगर इंडिया इतना खूबसूरत है, तो बाकी हमें खा लेने दो। तुमने 'इंडिया' खा लिया।
बाकी बचा 'भारत' हमें खाने दो। अंग्रेज ने कहा - अच्छा, हमें दस्त लगने लगे हैं। हम तो जाते हैं। तुम खाते रहना। यह बातचीत 1947 में हुई थी। हम लोगों ने कहा - अहिंसक क्रांति हो गई। बाहरवालों ने कहा - यह ट्रांसफर ऑफ पॉवर है - सत्ता का हस्तांतरण। मगर सच पूछो तो यह 'ट्रांसफर ऑफ डिश' हुआ - थाली उनके सामने से इनके सामने आ गई।
वे देश को पश्चिमी सभ्यता के सलाद के साथ खाते थे। ये जनतंत्र के अचार के साथ खाते हैं। फिर राजनीति आ गई। छोड़िए। बात शराब की हो रही थी। इस संबंध में जो शिक्षाप्रद बातें ऊपर कहीं हैं, उन पर कोई अमल करेगा, तो अपनी 'रिस्क' पर। नुकसान की जिम्मेदारी कंपनी की नहीं होगी। मगर बात शराब की भी नहीं, उस पवित्र आदमी की हो रही थी, जो मेरे सामने बैठा किसी के दुराचार पर चिंतित था।
मैं चिंतित नहीं था, इसलिए वह नाराज और दुखी था।
मुझे शामिल किए बिना वह मानेगा नहीं। वह शराब से स्त्री पर आ गया - और वह जो है न, अमुक स्त्री से उसके अनैतिक संबंध हैं।
मैंने कहा - हाँ, यह बड़ी खराब बात है।
उसका चेहरा अब खिल गया। बोला - है न?
मैंने कहा - हाँ खराब बात यह है कि उस स्त्री से अपना संबंध नहीं है।
वह मुझसे बिल्कुल निराश हो गया। सोचता होगा, कैसा पत्थर आदमी है यह कि इतने ऊँचे दर्जे के 'स्कैंडल' में भी दिलचस्पी नहीं ले रहा। वह उठ गया। और मैं सोचता रहा कि लोग समझते हैं कि हम खिड़की हवा और रोशनी के लिए बनवाते हैं, मगर वास्तव में

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

खिड़की अंदर झाँकने के लिए होती है।
कितने लोग हैं जो 'चरित्रहीन' होने की इच्छा मन में पाले रहते हैं, मगर हो नहीं सकते और निरे 'चरित्रवान' होकर मर जाते हैं। आत्मा को परलोक में भी चैन नहीं मिलता होगा और वह पृथ्वी पर लोगों के घरों में झाँककर देखती होगी कि किसका संबंध किससे चल रहा है।
किसी स्त्री और पुरुष के संबंध में जो बात अखरती है, वह अनैतिकता नहीं है, बल्कि यह है कि हाय उसकी जगह हम नहीं हुए। ऐसे लोग मुझे चुंगी के दरोगा मालूम होते हैं। हर आते-जाते ठेले को रोककर झाँककर पूछते हैं - तेरे भीतर क्या छिपा है? "...आपकी बेटी हमें 'चरित्रहीन' होने का चांस नहीं दे रही है"
एक स्त्री के पिता के पास हितकारी लोग जाकर सलाह देते हैं - उस आदमी को घर में मत आने दिया करिए। वह चरित्रहीन है। वे बेचारे वास्तव में शिकायत करते हैं कि पिताजी, आपकी बेटी हमें 'चरित्रहीन' होने का चांस नहीं दे रही है। उसे डाँटिए न कि हमें भी थोड़ा चरित्रहीन हो लेने दे।
जिस आदमी की स्त्री-संबंधी कलंक कथा वह कह रहा था, वह भला आदमी है - ईमानदार, सच्चा, दयालु, त्यागी। वह धोखा नहीं करता, कालाबाजारी नहीं करता, किसी को ठगता नहीं है, घूस नहीं खाता, किसी का बुरा नहीं करता। एक स्त्री से उसकी मित्रता है। इससे वह आदमी बुरा और अनैतिक हो गया।
बड़ा सरल हिसाब है अपने यहाँ आदमी के बारे में निर्णय लेने का। कभी सवाल उठा होगा समाज के नीतिवानों के बीच के नैतिक-अनैतिक, अच्छे-बुरे आदमी का निर्णय कैसे किया जाए। वे परेशान होंगे।
बहुत सी बातों पर आदमी के बारे में विचार करना पड़ता है, तब निर्णय होता है। तब उन्होंने कहा होगा - ज्यादा झंझट में मत पड़ो। मामला सरल कर लो। सारी नैतिकता को समेटकर टाँगों के बीच में रख लो।

परिणाम

हिन्दी के सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई किसी भी परिचय के मोहताज़ नहीं हैं. हिन्दी साहित्य में व्यंग्य विधा के लिए, हर वर्ग के पाठक की चेतना में अगर किसी का नाम पहले-पहल आता है, तो वो परसाई ही हैं.व्यंग्य विधा को अपने सुदृढ़ और आधुनिक रूप में खड़ा करने में परसाई के योगदान को आलोचकों ने एक सिरे से स्वीकार किया है. एक आधुनिक विधा के रूप में व्यंग्य की ख्याति 20वीं सदी में हुई. पाश्चात्य चिंतक जॉनथन स्विफ्ट व्यंग्य के विषय में कहते थे कि 'व्यंग्य एक ऐसा दर्पण है जिसमें देखने वाले को अपने अतिरिक्त सभी का चेहरा दिखता है.'इस विधा का मुख्य उद्देश्य है, व्यक्ति और उसके सामाजिक संदर्भों में दिखने वाली किसी भी विसंगति पर कुठाराघात करना, भले ही यह संदर्भ, व्यक्ति और समाज के संबंध का हो सकता है, वर्ग और जाति के समीकरण का हो सकता है या विभिन्न विचारधाराओं के टकराव का.एक व्यंग्यकार, व्यक्ति-जीवन की विडंबनाओं का एक ऐसा रेखाचित्र खींचता है जिसे पढ़कर एक चेतन पाठक अपने आप से भी सवाल उठाने पर विवश हो जाता है.व्यंग्य के विषय में स्वयं परसाई कहा करते थे 'व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, अत्याचारों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है.'22 अगस्त 1924 को होशंगाबाद, मध्य प्रदेश के जमानी ग्राम में जन्मे परसाई मध्यवर्गीय परिवार से आते थे. अल्पायु में ही मां की मृत्यु के बाद पिता की भी कालांतर में एक असाध्य बीमारी के बाद मृत्यु हो गई.अब चार छोटे भाई-बहनों की जिम्मेदारी परसाई पर ही थी. इस प्रकार इनका आरंभिक जीवन गहन आर्थिक अभावों के बीच बीता.अपने आत्मकथ्य 'गर्दिश के दिन' में उन्होंने बचपन की सबसे तीखी याद 'प्लेग' की भयावहता का ज़िक्र किया है,'1936 या 37 होगा. मैं शायद आठवीं का छात्र था. कस्बे में प्लेग पड़ी थी... रात को मरणासन्न मां के सामने हम लोग आरती गाते. गाते-गाते पिताजी सिसकने लगते, मां बिलखकर हम बच्चों को हृदय से चिपटा लेती और हम भी रोने लगते... ऐसे भयकारी त्रासदायक वातावरण में एक रात तीसरे पहर मां की मृत्यु हो गई.....पांच भाई-बहनों में मृत्यु का अर्थ मैं ही समझता था.' पर जिस गर्दिश की बात परसाई कहते थे, वह जीवन पर्यंत बनी ही रही. वे स्वयं स्वीकार करते थे कि गर्दिश का सिलसिला बदस्तूर है, मैं निहायत बेचैन मन का संवेदनशील आदमी हूं. मुझे चैन कभी मिल ही नहीं सकता. इसलिए गर्दिश नियति है.अपनी जीवनी में परसाई इस बात का खुलासा करते हुए कहते हैं कि बाल्यकाल में जिस व्यक्ति ने उन्हें सबसे ज़्यादा प्रभावित किया वह थीं उनकी बुआ. परसाई जी ने उनसे ही अपनी ज़िंदगी के कुछ मूल-मंत्र सीखे थे: जैसे, निस्संकोच किसी से भी उधार मांग लेना या बेफिक्र रहना. बड़े-से-बड़े संकट में भी वो यही कहते कोई घबराने की बात नहीं, सब हो जाएगा.

संघर्षों से भरे अपने जीवन में परसाई ने स्वयं को सदैव मजबूत बनाए रखा:'मैंने तय किया- परसाई, डरो किसी से मत. डरे कि मरे. सीने को ऊपर कड़ा कर लो, भीतर तुम जो भी हो. ज़िम्मेदारी को गैर ज़िम्मेदारी के साथ निभाओ.'परसाई के व्यक्तित्व में धार्मिक रूढ़िवादिता, जातीयता, धार्मिक कट्टरता इन सबके विरुद्ध जो एक खास किस्म का विरोधी तेवर दिखलाई पड़ता है उसका बहुत कुछ श्रेय वह अपनी बुआ को देते हैं.उनसे ही उन्होंने सीखा कि जातीयता और धर्म बेकार के ढकोसले हैं. स्वयं उनकी बुआ ने पचास साल की अवस्था में तमाम विरोधों के बावजूद एक अनाथ मुस्लिम लड़के को अपने यहां शरण दे रखी थी.जीविकोपार्जन के संदर्भ में भी परसाई ने कभी किसी बंधी-बंधाई परंपरा का निर्वाह नहीं किया. अपने स्वाभिमानी व्यक्तित्व और आदर्शवादी स्वभाव ने उन्हें किसी भी नौकरी में टिकने नहीं दिया.मैट्रिक की परीक्षा उतीर्ण करते ही उन्होने जंगल विभाग में नौकरी शुरू की. जंगल में ही सरकारी टपरे पर रहते थे. ईंटों की चौकी बनाकर, पटिये और चादर बिछाकर सोया करते थे, जहां चूहों की धमाचौकड़ी रात भर

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

चलती थी. परसाई अपने इन दिनों के विषय में कहते हैं,'चूहों ने बड़ा उपकार किया. ऐसी आदत डाली कि आगे की ज़िंदगी में भी तरह-तरह के चूहे मेरे नीचे उधम करते रहे हैं, सांप तक सर्राते रहे हैं, मगर मैं पटिये बिछाकर, पटिये पर सोता हूं.' आर्थिक संकटों के बीच ही उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की और छिट-पुट अध्यापन का कार्य शुरू किया. कुछ वर्षों तक अध्यापन कार्य करने के बाद उन्होंने 1947 में विद्यालय की नौकरी छोड़ दी.कुछ सालों बाद शाजापुर में एक कॉलेज के प्रिंसिपल नियुक्त होने का प्रस्ताव आया, पर उन्होंने इसे भी अस्वीकार कर दिया और जबलपुर में रहकर स्वतंत्र रूप से लेखन करना स्वीकार किया.यहीं रहकर उन्होंने साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' का प्रकाशन और संपादन किया. इसके अतिरिक्त दैनिक अखबार 'देशबंधु' में 'पूछो परसाई से' स्तंभ भी बराबर लिखा जहां पर पाठकों के सवालों के माध्यम से विचार-विमर्श किया जाता रहा.परसाई हिन्दी की प्रायः सभी प्रमुख पत्रिकाओं से स्तंभ लेखक के रूप में आजीवन जुड़े रहे. अपने पहले चरण में तो वसुधा दो वर्ष तक, लगातार प्रकाशित होती रही, जिसके संपादक की भूमिका परसाई ने निभाई.हालांकि आर्थिक तंगी और संसाधनों के अभाव की वजह से दो वर्षों के बाद पत्रिका को बंद करना पड़ा. आगे चलकर मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ की पत्रिका के रूप वसुधा को एक बार फिर पुनर्जीवित किया गया और संघ के अध्यक्ष होने के नाते पत्रिका के संपादन का कार्यभार भी परसाई को ही दिया गया.'मेरे समकालीन' शीर्षक से परसाई ने भी अपने स्तंभ की शुरुआत की थी. हालांकि इस प्रकार के स्वतंत्र लेखन की एक सबसे बड़ी अनिश्चितता यह रही कि आय की अनियमितता के कारण परसाई सदैव आर्थिक संकट में उलझे रहे.मसलन, अगर अख़बार की आमदनी घट जाती या किसी अखबार में लंबी हड़ताल हो गई तो उनकी रचनाओं का मेहनताना भी उन्हें समय पर नहीं मिलता था.और ऐसे समय में मित्रों और परिचितों से उधार मांगने के दौर चला करते थे, पर चेहरे पर शिकन नहीं आती और जीने का जज़्बा बरक़रार रहता.परसाई एक सफल व्यंग्यकार हुए, उसके पीछे एक सबसे बड़ी वजह संभवतः यह भी है कि वह स्वयं पर भी व्यंग्य करने या अपनी खुद की आलोचना करने से नहीं डरते थे.अपनी जीवनी में उन्होंने बीसियों बार स्वयं के ऊपर एक तटस्थ आलोचक की तरह आत्मलोचन किया है. उनकी मर्मभेदी लेखनी ने अपनी कमियों को भी बारंबार उभारा है. मिसाल के तौर पर, परसाई अपने बेटिकट यात्रा करने के संदर्भ में कहते हैं:'एक विद्या मुझे और आ गई थी- बिना टिकट सफर करना. जबलपुर से इटारसी, टिमरनी, खंडवा, इंदौर, देवास बार-बार चक्कर लगाने पड़ते. पैसे थे नहीं. मैं बिना टिकट बेखटके गाड़ी में बैठ जाता. तरकीबें बचने की बहुत आ गई थीं. पकड़ा जाता तो अच्छी अंग्रेजी में अपनी मुसीबत का बखान करता. अंग्रेजी के माध्यम से मुसीबत बाबुओं को प्रभावित कर देती और वे कहते-लेट्स हेल्प दि पुअर बॉय.'

वे एक जगह लिखते हैं:'गैर ज़िम्मेदारी इतनी कि बहन की शादी करने जा रहा हूं. रेल में जेब कट गई, मगर अगले स्टेशन पर पूरी-साग खाकर मज़े में बैठा हूं कि चिंता नहीं. कुछ हो ही जाएगा. और हो गया.'

परसाई ने स्वयं अविवाहित रहते हुए अपने सभी भाई-बहनों की ज़िम्मेदारी का निर्वाह किया, पर उनके स्वयं का जीवन भी यातना-गर्भित व्यंग्य है.काम के प्रति उनकी निष्ठा ने उन्हें इस विषम ज़िंदगी को झेल जाने की वह शक्ति दी थी कि जीवन के प्रति एक वीतराग का भाव उनके अंदर आ गया था. परसाई ने अपने एक निबंध 'पहला सफ़ेद बाल' में लिखा है:'अपना कोई पुत्र नहीं. होता तो मुश्किल में पड़ जाते. क्या देते?... तो इतना रंक नहीं हूं- विराट भविष्य तो है और उत्तराधिकारी की समस्या भी हल हो गई. होने दो हमारे बाल सफ़ेद. हम काम में तो लगे हैं- जानते हैं कि काम बंद करने और मरने का क्षण एक ही होता है.' परसाई के व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता जो उन्हें एक अनोखा व्यंग्यकार बनाती है वो है, सच कह पाने का हौसला और उसके परिणामों को साहस के साथ स्वीकार कर पाने का जज़्बा.वे जिनकी कलई खोलते, निर्भीकता के साथ खोलते थे. सन 1975 में राष्ट्रीय आपातकाल के समय में सत्ता पक्ष के विपरीत जाकर सच कह पाने का साहस परसाई के निबंधों में ही दिखता है.राष्ट्र के धर्म-निरपेक्ष ताने-बाने को नष्ट करने वाले तत्वों को वो अपनी लेखनी के माध्यम से आड़े हाथों लेते थे. विश्वनाथ उपाध्याय लिखते हैं:'मुझे हरिशंकर परसाई की लंबी पतली काया बंदूक की नली सी लगती है जिसमें से व्यंग्य भन्नाता हुआ निकलता है और जनशत्रु को छार-छार कर देता है.'एक साहित्यकार के रूप में परसाई के रचना संसार की विविधता का आकलन इस बात से लगाया जा सकता है कि मुख्यतया एक सफल व्यंग्यकार (व्यंग्य संग्रह: तब की बात और थी, भूत के पांव पीछे, बेईमानी की परत, वैष्णव की फिसलन, पगडण्डियों का जमाना, शिकायत मुझे भी है, सदाचार का ताबीज, तुलसीदास चंदन घिसैं, हम इक उम्र से वाकिफ हैं, जाने पहचाने लोग) होने के साथ ही उन्होंने कहानी (कहानी-संग्रह: हंसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे) और उपन्यास (रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज) जैसी विधाओं में भी लेखन किया.हालांकि उनकी रचनाधर्मिता के स्वरूप के विषय में आलोचक नामवर सिंह यह मानते हैं कि परसाई ने क्रमशः कहानियों की दुनिया को छोड़ते हुए निबंधों की दुनिया में प्रवेश किया, जहां घटनाएं सिर्फ उदाहरण के लिए प्रयोग की जाती हैं.

इस सिलसिले में स्वयं परसाई कहते थे:'कहानी लिखते हुए मुझे यह कठिनाई बराबर आती है कि जो मैं कहना चाहता हूं, वह मेरे इन पात्रों में से कोई नहीं कह सकता. तो क्या करूं? क्या कहानी के बीच में निबंध का एक टुकड़ा डाल दूं? पर इससे कथा प्रवाह रुकेगा.' और शायद यही वजह है कि परसाई को सबसे अधिक सफलता निबंध लेखन में ही मिली, न कि कहानियों में. हालांकि भोलाराम का जीव, कहानी हिन्दी की उत्कृष्ट व्यंग्य कहानियों में गिनी जाती है, जिसमें परसाई ने सरकारी कार्यालयों और

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

लालफीताशाही पर प्रहार किया है.अपने प्रसिद्ध व्यंग्य निबंध संग्रह 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए सन 1982 में साहित्य अकादमी सम्मान प्राप्त करने वाले परसाई हिन्दी के एकमात्र व्यंग्यकार हैं. परसाई की रचनाओं के अनुवाद लगभग सभी भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में हो चुके हैं.एक व्यंग्यकार की सफलता का आकलन इसी तथ्य से किया जा सकता है कि उसके व्यंग्यों की सामाजिक सोद्देश्यता क्या है? और उसके सरोकार क्या हैं? लेखक की सामाजिक प्रतिबद्धता के विषय में परसाई के विचार थे:'लेखक समाज का एक अंग है और उस समाज पर जो गुजरती है, उसमें सहभागी है. समाज के उत्थान और पतन, संघर्ष, सुख-दुख, आशा-निराशा, अन्याय-उत्पीड़न आदि में वह दूसरों का सहभोक्ता है.' लेखक की समाज में फैली विसंगतियों को पहचानने की पीड़ा, उसकी व्यक्तिगत पीड़ा है जिसका समाधान वह समूह में और समूह के लिए ढूंढना चाहता है.इसीलिए अज्ञेय जिस व्यक्ति-स्वातंत्र्य की बात अपने विचारों में करते हैं, परसाई उसका सम्मान करते हुए भी व्यक्ति और व्यक्ति-निर्मित कला की एक सामाजिक सोद्देश्यता के पक्षधर हैं. परसाई कहते हैं:'मनुष्य की छटपटाहट है मुक्ति के लिए, सुख के लिए, न्याय के लिए. पर यह बड़ी लड़ाई अकेले नहीं लड़ी जा सकती है.अकेले वही सुखी है, जिन्हें कोई लड़ाई नहीं लड़नी. उनकी बात अलग है. अनेक लोगों को सुखी देखता हूं और अचरज करता हूं कि ये सुखी कैसे हैं. न उनके मन में सवाल उठते हैं न शंका उठती है.' समाज के शोषितों और गरीबों के प्रति परसाई की सहानुभूति और संवेदना सिर्फ बौद्धिक ही नहीं, बल्कि क्रियात्मक भी थी. परसाई को याद करते हुए, मायाराम सुरजन ने लिखा है:'वे राजनांदगांव आएंगे तो शरद कोठारी के रसोइये से पाचक चूरन की शीशी खरीदना नहीं भूलेंगे. मेरा एक ड्राइवर इक़बाल उन्हें घंटों अपनी शायरी सुना देता और वे ऐसे सुनते जैसे उसमें ही डूब गए हैं.किसी ने अपना दुखड़ा सुनाया तो उसकी मदद चाहे वह उनके बस की बात न हो, करने में सबसे आगे, भले ही फिर उसका बोझा दूसरे उठाएं.'परसाई के व्यंग्यों में समय और समाज की विसंगतियों और विरोधाभासों को मौके-बेमौके परास्त होते देखा जा सकता है: प्रेम विवाहों और अन्तर्जातीय विवाहों के संदर्भ में परसाई अपने एक परिचित की मान्यताओं के उत्तर में लिखते हैं:'भगवान अगर औरत भगाये तो वह बात भजन में आ जाती है. साधारण आदमी ऐसा करे तो यह काम अनैतिक हो जाता है. जिस लड़की की आप चर्चा कर रहे हैं, वह अपनी मर्ज़ी से घर से निकल गई और मर्ज़ी से शादी कर ली, इसमें क्या हो गया?'आगे, परिचित महोदय कहते हैं: आप जानते हैं, लड़का-लड़की अलग जाति के हैं?मैंने पूछा- मनुष्य जाति के तो हैं न?.... कम से कम मनुष्य जाति में तो शादी हुई. अपने यहां तो मनुष्य जाति के बाहर भी महान पुरुषों ने शादी की है- जैसे भीम ने हिडिंबा से. इसी निबंध में परसाई आगे कहते हैं:क्या कारण है कि लड़के-लड़की को घर से भागकर शादी करनी पड़ती है? 24-25 साल के लड़के-लड़की को भारत की सरकार बनाने का अधिकार तो मिल चुका है, पर अपने जीवन-साथी बनाने का अधिकार नहीं मिला. इसी प्रकार देश में धर्म और संप्रदाय के नाम पर जिस प्रकार कट्टर अतिवादियों द्वारा मुद्दों को उछाला और अपने हितों के लिए प्रयोग किया जाता है, परसाई अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से उसे भांप लेते हैं और उसके विरोध में अपनी लेखनी चलाते.आज कल के तथाकथित लव जिहाद पर परसाई का यह विश्लेषण एकदम सटीक बैठता है:'अपने यहां प्रेम की भी जाति होती है. एक हिंदू प्रेम है, एक मुसलमान प्रेम, एक ब्राह्मण प्रेम, एक ठाकुर प्रेम, एक अग्रवाल प्रेम. एक कोई जावेद आलम किसी जयंती गुहा से शादी कर लेता है, तो सारे देश में लोग हल्ला कर देते हैं और दंगा भी करवा सकते हैं.' इसी प्रकार, अपने एक प्रसिद्ध निबंध 'एक गोभक्त से भेंट' में उन्होंने गाय को एक प्रतीक की तरह चुनावों में भुनाने के राजनीतिक ढर्रे की पोल खोली है. परसाई, एक गोरक्षक साधु के तर्क को इस प्रकार व्यक्त करते हैं:'जनता जब आर्थिक न्याय की मांग करती है, तब उसे किसी दूसरी चीज़ में उलझा देना चाहिए, नहीं तो वह खतरनाक हो जाती है.जनता कहती है हमारी मांग है, मंहगाई बंद हो, मुनाफाखोरी बंद हो, वेतन बढ़े, शोषण बंद हो, तब हम उससे कहते हैं कि नहीं, तुम्हारी बुनियादी मांग गोरक्षा है. बच्चा, आर्थिक क्रांति की तरफ बढ़ती जनता को हम रास्ते में ही गाय के खूँटे से बांध देते हैं. यह आंदोलन जनता को उलझाए रखने के लिए है.'

देखा जाये तो एक व्यंग्यकार होने की परसाई की विशेषता में ही कहीं-न-कहीं उनके सबसे पहले एक नितांत मानववादी होने की विशेषता मिली हुई है.एक व्यंग्यकार के रूप में उन्होंने इस विधा को एक साहित्यिक मान्यता दिलवाई क्योंकि बात को जिस बेबाकी और खरेपन से परसाई अपने निबंधों में रखते हैं, वह शैली न केवल हिन्दी साहित्य के लिए बल्कि हिन्दी व्यंग्य के लिए भी एक नई और अनोखी बात थी.और एक मानववादी होने के नाते उनके इस व्यंग्य के केंद्र में भी मनुष्य के हित की योजना ही शामिल थी.प्रसिद्ध विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहा करते थे 'व्यंग्य वह है जहां कहने वाला तो अधरोष्ठों में हंस रहा हो और पर सुनने वाला तिलमिला रहा हो.'कुछ इसी तरह की व्यंग्य क्षमता हम मध्यकालीन भक्ति संत कबीर में पाते हैं जब वह एक सुर में सभी धर्म के कट्टर तत्वों को हांक लगाते थे.इसी नज़र से देखा जाये तो आधुनिक युग में व्यंग्य में सामाजिक सोद्देश्यता का पुट मिलाकर परसाई भी कबीर के ही एक नए अवतार से कम नहीं लगते.

निष्कर्ष

प्रसिद्ध व्यंग्यकार राधाकृष्ण व्यंग्य को ताना साहित्य कहते हैं। सामान्य अर्थ में व्यंग्य का अर्थ ताना मारना या फिर आलोचना करना ही समझ में आता है। व्यंग्य की व्युत्पत्ति 'वि' उपसर्ग पूर्वक अञ्ज् धातु में ण्यत् प्रत्यय लगने से हुई है। व्यंग्य प्रत्यक्ष निंदा, भर्त्सना या गालीगलौज के स्तर से इतर उदात्त संवेदनाओं से भरा होता है। व्यंग्य अर्थगत भंगिमाओं की व्यंजक अभिव्यक्ति है, जो अपने चुटीले, रोचक और हास्य-विनोद के द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक विकृतियों पर प्रहार करके जीवन को सही

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

दिशा प्रदान करती है।व्यंग्य को जन्म देने वाली मानसिकता को समझें तो लगता है समाज और जीवन की विसंगतियों के आत्मबोध से व्यंग्य का जन्म होता है, अर्थात व्यंग्य विसंगतियों की उपज होता है। किसी भी प्रकार की विसंगति या विकृति कष्टकारक होती है। अतः व्यंग्यकार इसी से उबरने-उबारने के लिए प्रतिशोध का सहारा लेकर व्यंग्य करता है। वह साहसी और निर्भीक होता है, क्योंकि कायर और डरपोक कभी व्यंग्य रचना कर ही नहीं सकते। हरिशंकर परसाई ने स्वयं के लिए लिखा भी है : "मैंने तय किया- परसाई, डरो किसी से मत। डरे कि मरे। सीने को ऊपर कड़ा कर लो, भीतर तुम जो भी हो। ज़िम्मेदारी को गैरज़िम्मेदारी के साथ निभाओ।"व्यंग्य की सार्थकता पर हरिशंकर परसाई जी की मान्यता है कि "जितना व्यापक परिवेश होगा, जितनी गहरी विसंगति होगी और जितनी तिलमिला देने वाली अभिव्यक्ति होगी, व्यंग्य रचना उतनी ही सार्थक होगी।" उनका यह भी मानना था कि व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, अत्याचारों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।"दरअसल व्यंग्य आलोच्य विषय का समीक्ष्य, बौद्धिक स्तर है। वह उन विद्रूपताओं पर इस तरह से कुठाराघात करता है कि पाठक में गहरी प्रतिक्रिया हो, जिससे वह उन सामाजिक विसंगतियों से जूझने और उनसे मुक्ति पाने के लिए विचार करे और प्रतिकार के लिए प्रेरित हो। व्यंग्य व्यक्ति और समाज का मार्गदर्शक है और व्यंग्यकार शाश्वत मूल्यों का रक्षक। समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार, ढोंग, अवसरवादिता, अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता आदि कुप्रवृत्तियों का वह पर्दाफाश करता है। भारतीय साहित्य में व्यंग्य की शुरुआत कबीर की रचनाओं से होती है लेकिन उसका स्वरूप पद्य था; गद्य के रूप में व्यंग्य की शुरुआत भारतेन्दु युग में हुई। उस जमाने में ज्यादातर व्यंग्य प्रहसन और स्तोत्र शैली में ही लिखे गये। उस युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र के अलावा प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी गणनीय थे। "अंधेर नगरी चौपट राजा" उस समय की एक कालजयी व्यंग्य नाटिका है। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में भी सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य किया गया है। उस युग में प्रेमचंद सहित अमृतलाल नागर, यशपाल और भगवतीचरण वर्मा की रचनाओं में उच्चकोटि के व्यंग्य मिलते हैं। द्विवेदी युग में भी व्यंग्यकार हुए, जिनमें महावीर प्रसाद द्विवेदी और बालमुकुंद गुप्त आदि ने व्यंग्य विधा पर सृजन किया है। वैसे तो हास्य और व्यंग्य दोनों ही भिन्न विधाएँ हैं, हास्य बहिर्मुखी है तो व्यंग्य अन्तमुर्खी। लेकिन भारतेंदु हरिश्चंद्र और आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रचनाओं में हास्य और व्यंग्य दोनों का समन्वय उत्कर्ष पर है, दोनों में हास्य और व्यंग्य के संयुक्त बिम्ब के दर्शन होते हैं। व्यंग्य के लिए भावना, कल्पना, चिंतन की अतिशयता के साथ जटिल मानिसक अवस्था जरूरी है। यही कारण है कि निराला व्यंग्य कर सके। निराला द्वारा लिखित 'कुकुरमुत्ता', 'बिल्लेसुर बकरिहा', 'नये पत्ते' इस युग की श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं हैं। कुछ लोगों का मानना है कि व्यंग्य कोई स्वतंत्र विधा नहीं है वह तो सहज प्रवृत्ति है, जो अभिव्यक्ति की विविध विधाओं में मसलन उपन्यास, नाटक, लेख, कविता, निबंध आदि के रूप में लिखा जाता रहा है। लेकिन कुछ विद्वान इसे विशिष्ट विधा के रूप में स्वीकृति देते हैं।

यह भी देखा गया है कि अस्सी प्रतिशत व्यंग्य निबंधात्मक हैं, और निबंध विधा में ही व्यंग्यकारों को पहचान मिली। व्यंग्य लेखन जितना निबंधों में सफल रहा है, उतना अन्य विधाओं में नहीं। निबंध में व्यंग्यकारों को आत्माभिव्यक्ति की जितनी आजादी मिलती है, अन्य विधाओं में नहीं, व्यंग्यकार स्वतंत्रतापूर्वक अनेक संदर्भों का समायोजन कर आलोच्य विषय पर सम्यक प्रहार करता है। निबंध सृजनधर्मिता की ललित अभिव्यक्ति है। इस दृष्टि से देखें तो व्यंग्य साहित्य का सम्पूर्ण विकास आधुनिक युग में ही हुआ है जिसमें सर्वप्रथम हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, शरद जोशी, रवींद्र त्यागी, लतीफ घोंघी, बरसाने लाल चतुर्वेदी, डॉ सुदर्शन मजीठिया प्रभृति व्यंग्यकार प्रमुख हैं। श्रीलाल शुक्ल, शरद जोशी और हरिशंकर परसाई ने गद्य के व्यंग्य को शिखर पर पहुंचाया।दूसरी पीढ़ी में स्व. लक्ष्मीकांत वैष्णव, कृष्ण चराटे, रमेश बक्षी, गोपाल चतुर्वेदी, डॉ सूर्यबाला, डॉ रमाशंकर श्रीवास्तव, पूर्णसिंह डबास, डॉ. सरोजिनी प्रीतम, डॉ. प्रेम जनमेजय, डॉ. मधुसूदन पाटिल, डॉ. रामनारायण सिंह, बलवीर त्यागी, भवानीशंकर व्यास, हरिकृष्ण दासगुप्त, घनश्याम अग्रवाल, एवं सतीश कुमार शेखड़ी प्रमुख हैं। नई पीढ़ी के व्यंग्यकारों में सूर्यकांत नागर, डा.महेंद्रकुमार ठाकुर , गिरीश पंकज और विनोद साव, विनोदशंकर शुक्ल, डॉ.संतोष दीक्षित, महावीर अग्रवाल, शेरजंग जांगली दीपक प्रभृति का व्यंग्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है। 21वीं सदी में डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी का नाम भी प्रमुख व्यंग्यकारों में समादृत है। वर्तमान समय में उपन्यास विधा में व्यंग्य नहीं लिखा जा रहा है। व्यंग्य नाटक लिखने वालों में डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी और श्याम मोहन अस्थाना हैं। शरद जोशी एवं श्रीलाल शुक्ल की रचनाओं में जहां गंभीरता है तो वहीं दूसरी ओर हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में व्यापकता, और आक्रमकता की तेज धार है। लतीफ घोंघी की व्यंग्य रचनाएं कहीं गुदगुदाती हैं तो कहीं नश्तर सी चुभोती हैं। व्यंग्य को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए हास्य और व्यंग्य का उत्तम समायोजन जरूरी है जिससे श्रेष्ठ लोकप्रिय व्यंग्य का सृजन हो सके, एवं मध्यमार्ग ग्राह्य हो। व्यंग्य को ज्यादा उग्र, आक्रामक और हिंसक नहीं होना चाहिए, व्यंग्यकार को व्यंग्य में सरसता, सोद्देश्यता, सजीवता, रुचिता की दृष्टि से भावबोध पैदा करना चाहिए। जो कि हरिशंकर परसाई के ज्यादातर लघुकाय, आत्मपरक, विश्लेषणात्मक व्यंग्य निबंधों में देखने को मिलता है। परसाई जी ने जनसाधारण से लेकर बड़े बड़े राजनेता, बुद्धिजीवी, भगवान, महात्मा, पण्डे, पुजारी, मठाधीश, साहूकार, पूँजीपति, प्रशासक, अध्यापक, डॉक्टर, वकील, थानेदार, प्रेमी-प्रेमिका, युद्धशास्त्री, अवसरवादी विविध चरित्रों को व्यंग्य के माध्यम से पाठकों के समक्ष अनावृत किया। हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य उद्देश्य प्रधान होते हैं। उनकी रचनाएं पाठकों को सोचने-विचारने को बाध्य करती हैं। परसाई जी के व्यंग्य समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार, ढोंग, अवसरवादिता, अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता आदि कुप्रवृत्तियों पर कुठाराघात करते हैं उनकी रचनाएं हमें अपने समय के यथार्थ से रूबरू

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

कराती हैं। उनके व्यंग्य पाठकों को आदर्श जीवनदृष्टि से समृद्ध करते हैं।उनकी सृजनधर्मिता कबीर की परम्परा को आगे बढ़ाती है। एक प्रकार से कहें तो कबीर की परम्परा को ही हरिशंकर परसाई ने अपनी गद्यविधा में विकसित किया है, उसे आगे बढ़ाया है। निसंदेह परसाई हिंदी के श्रेष्ठ व्यंग्यकार हैं।उन्होंने देश के आम लोगों की आकांक्षाओं, असफलताओं एवं जीवन संघर्षों को बहुत करीब से देखा और जिया था। विद्रूप स्थितियों से उनकी नाराजगी तब अधिक उग्र और आक्रामक हो जाती है जब आदमी आदमी न होकर चालाकी और धूर्तता का पर्याय हो जाए। सामाजिक विद्रूपताओं और इनके भीतरी कारणों को हरिशंकर परसाई जी ने अपनी व्यंग्य रचनाओं से पाठकों को समझाने की कोशिश की है। परसाई जी का व्यंग्य समाज से उपजी विसंगतियों की गहरी पड़ताल करता है। उन्होंने ही व्यंग्य को एक स्वतत्रं विधा के रूप में स्थापित करने में अपनी कालजयी भूमिका निभाई। उनके व्यंग्य निबंधों में चिंतन की गहनता देखी जा सकती है।

परसाई का व्यंग्य हमें अपना सा इसलिए भी लगता है, क्योंकि वे स्वयं पर व्यंग्य करने से भी नहीं चूकते। वे स्वयं में एक साधारण आदमी की जिंदगी को अनुभव करते हैं। वे व्यंग्य को इतने शिद्दत और आत्मीय ढंग से लिखते हैं कि पाठक को अपनेपन का अहसास होने लगता है।उन्हें पढ़ते हुए महसूस होता है जैसे वे सामने ही खड़े हों, सभी प्रश्नों के जवाबों से लैस। उनकी भाषा शैली में एक खास किस्म का अपनापन है। ऐसे व्यंग्यकार विरले ही मिलते हैं। उनकी भाषा शैली व्यंग्य के लिए सर्वथा अनुकूल थी। सरल शब्दों में लिखना उन्हें पसंद था। उनकी रचनाओं में मुहावरों, कहावतों के साथ-साथ बोलचाल से लेकर, तत्सम, अंग्रेजी शब्दों को भी स्थान दिया गया है। उनके व्यंग्य में लक्षणा और व्यंजना का कुशल प्रयोग देखते ही बनता है। उनके वाक्य लघुकाय हुआ करते हैं। संस्कृत व उर्दू शब्दों का भी उन्होंने प्रचुरता के साथ प्रयोग किया है।

हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं में सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक क्षेत्र में फैली हुई विकृतियों और कारगुजारियों पर बहुत ही सरलता और सहजता के साथ छिद्रान्वेषण और उस पर कटाक्ष किया गया है। धर्म, जातीयता, रूढ़ परम्पराओं से उन्हें चिढ़ है। देश में व्याप्त भुखमरी, अपराध, शोषण, अनाचार, अकाल, बाढ़, युवा आक्रोश, जन-आंदोलन, साम्प्रदायिक दंगों धार्मिक उन्माद जैसी घटनाओं, कलाकारों, बुद्धिजीवियों के दोहरे चरित्रों, संघी-पंथी सोच की सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से व्याख्या या विवेचना ही नहीं करते बल्कि धर्म, समाज, राजनीति में विद्यमान विसंगतियों को जन्म देने वाले कारकों की तह तक जाते हैं और उन तमाम विसंगतियों से मुक्ति के मार्ग तलाशते हैं।दैनिक अमर उजाला में प्रकाशित व्यंग्य "सुनो भाई साधो" पर सिक्खों का प्रदर्शन हुआ था। अकाली आन्दोलन की विसंगतिपूर्ण भूमिका पर टिप्पणी के कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित दो युवाओं ने 21 जून 1973 के दिन उनके निवास स्थान पर उन पर आक्रमण कर दिया था। इस आक्रमण के बाद परसाई जी का 24 -25 जून को स्थानीय समाचार-पत्रों में "मेरा लिखना सार्थक हो गया" वक्तव्य प्रकाशित हुआ था। इन घटनाओं से यह मालूम होता है कि एक व्यंग्यकार के रूप में उनका लेखन कितना सार्थक और प्रभावशाली हुआ करता था। वे साहसी भी कम न थे। लिखते समय परिणामों की उन्हें चिंता नहीं रहती थी। सन् 1975 में राष्ट्रीय आपातकाल के समय में उन्होंने सत्तापक्ष के विरुद्ध लिखा था। उनकी निर्भीकता और व्यंग्य की धार से प्रभावित होकर विश्वनाथ उपाध्याय ने लिखा था:-
'मुझे हरिशंकर परसाई की लंबी पतली काया बंदूक की नली सी लगती है जिसमें से व्यंग्य भन्नाता हुआ निकलता है और जनशत्रु को छार-छार कर देता है।'उनकी व्यंग्य रचनाओं में "पगडंडियों का जमाना" दो दर्जन से भी अधिक चुटीले व्यंग्य निबंधों का संग्रह है। संगृहीत निबंध पूर्व में 'ज्ञानोदय', 'धर्मयुग' एवं 'नई कहानियाँ' जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। "सदाचार का तावीज", "वैष्णव की फिसलन", "विकलांग श्रद्धा का दौर', जिसके लिए 1982 में उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिया गया था। "प्रेमचंद के फटे जूते", "ऐसा भी सोचा जाता है", "तुलसीदास चंदन घिसैं ",'हँसते हैं रोते हैं" , "हम इक उम्र से वाकिफ हैं", "जैसे उनके दिन फिरे", "भोलाराम का जीव", हिंदी का श्रेष्ठ व्यंग्य कहानी संग्रह है। जिसमें सरकारी कार्यालयों और लालफीताशाही, ब्यूरोक्रेसी पर जमकर प्रहार किया गया है.उपन्यास "रानी नागफनी की कहानी", "तट की खोज", "ज्वाला और जल", संस्मरण 'तिरछी रेखाएँ", व्यंग्य निबंध संग्रहों में "तब की बात और थी", सदाचार की ताबीज", "भूत के पाँव पीछे", "बेईमानी की परत", "अपनी अपनी बीमारी", "माटी कहे कुम्हार से", तिरछी निगाहें", "काग भगोड़ा", "आवारा भीड़ के खतरे", 'शिकायत मुझे भी है" , "उखड़े खंभे", 'बस की यात्रा", इत्यादि प्रमुख हैं। हिंदी की सभी ख्यात पत्र-पत्रिकाओं में उनके स्तंभ काफी चर्चित रहे। जिनमें से कुछ प्रमुख स्तंभ इस प्रकार हैं- 'नई दुनिया' में 'सुनो भई साधो'; 'नई कहानियाँ' में 'पाँचवाँ कालम', और 'उलझी-उलझी'; 'कल्पना' में 'और अंत में', "माजरा क्या है" "मेरे समकालीन"। उनकी व्यंग्य रचनाएं धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान जैसी श्रेष्ठ पत्रिकाओं में भी निरन्तर छपतीं थीं। कुछ वर्षों तक उन्होंने "वसुधा" पत्रिका का संपादन कार्य भी किया। बाद में वित्तीय संकट के कारण 'वसुधा' पत्रिका बंद हो गई थी।

प्रश्नात्मक शैली में लिखी गई व्यंग्य रचनाओं में हरिशंकर परसाई जी पहले तो प्रश्नों की झड़ी लगा देते हैं। उनके प्रश्न पाठक के मस्तिष्क को भीतर से झकझोर देते हैं । प्रश्नात्मक शैली में लिखा गया "पूछिए परछाई से" देशबंधु में उनका एक कालम निकलता था, जिसमें वे पाठकों के प्रश्नों का जवाब दिया करते थे। वह कालम भी काफी लोकप्रिय हुआ था।परसाई जी का जन्म 22 अगस्त 1924 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद के जमानी ग्राम में हुआ था, और मृत्यु 10 अगस्त 1995, जबलपुर, मध्य

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

प्रदेश में हुई थी। उस समय उनकी आयु 72 वर्ष की थी। हरिशंकर परसाई जी के साहित्यिक योगदानों के लिए उन्हें रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर ने डी.लिट् की मानद उपाधि से नवाजा था। मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के द्वारा सन् 1978 में उन्हें "भवभूति सम्मान" दिया गया था। सन् 1986 में उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिया गया था एवं सन् 1984 में उन्हें मध्य प्रदेश शासन द्वारा "शिखर सम्मान" से सम्मानित किया गया। निश्चय ही हिंदी व्यंग्य साहित्य में उनका युगांतरकारी स्थान अक्षुण्ण बना रहेगा।

संदर्भ

हरिशंकर परसाई हिन्दी व्यंग्य, कहानियाँ, संस्मरण
- अकाल-उत्सव
- अध्यक्ष महोदय (मिस्टर स्पीकर) (व्यंग्य)
- अनुशासन (व्यंग्य)
- अपना-पराया (लघुकथा)
- अपनी अपनी बीमारी (व्यंग्य)
- अपील का जादू (व्यंग्य)
- अफसर कवि (व्यंग्य)
- अयोध्या में खाता-बही (व्यंग्य)
- अश्लील (व्यंग्य)
- असहमत (व्यंग्य)
- आध्यात्मिक पागलों का मिशन (व्यंग्य)
- आवारा भीड़ के खतरे (व्यंग्य)
- आँगन में बैंगन (निबंध)
- इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर (व्यंग्य)
- इस तरह गुजरा जन्मदिन (व्यंग्य)
- ईश्वर की सरकार (व्यंग्य)
- उखड़े खंभे (व्यंग्य)
- एक अशुद्ध बेवकूफ (व्यंग्य)
- एक और जन्म-दिन (व्यंग्य)
- एक गौभक्त से भेंट (व्यंग्य)
- एक मध्यमवर्गीय कुत्ता (व्यंग्य)
- एक लड़की, पाँच दीवाने (व्यंग्य)
- कंधे श्रवणकुमार के (व्यंग्य)
- कबीर का स्मारक बनेगा (व्यंग्य)
- क्रांतिकारी की कथा (व्यंग्य)
- कहावतों का चक्कर (व्यंग्य)
- किस भारत भाग्य विधाता को पुकारें (व्यंग्य)
- किस्सा मुहकमा तालीमात (व्यंग्य)
- कैफियत (भूमिका): सदाचार का तावीज़
- खेती (व्यंग्य)
- ग्रीटिंग कार्ड और राशन कार्ड (व्यंग्य)
- गॉड विलिंग (व्यंग्य)
- गांधीजी की शॉल (व्यंग्य)
- ग़ालिब के परसाई (व्यंग्य)
- घायल वसंत (व्यंग्य)
- घुटन के पन्द्रह मिनट (व्यंग्य)
- चंदे का डर (लघुकथा)
- चूहा और मैं (व्यंग्य)
- जाति (व्यंग्य)
- जैसे उनके दिन फिरे (व्यंग्य)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

- जिंदगी और मौत का दस्तावेज़ (व्यंग्य)
- टार्च बेचनेवाले (व्यंग्य)
- टेलिफोन (व्यंग्य)
- ठिठुरता हुआ गणतंत्र (व्यंग्य)
- तीसरे दर्जे के श्रद्धेय (व्यंग्य)
- दवा (व्यंग्य)
- दस दिन का अनशन (व्यंग्य)
- दानी (लघुकथा)
- दो नाक वाले लोग (व्यंग्य)
- नया साल (व्यंग्य)
- न्याय का दरवाज़ा (व्यंग्य)
- निंदा रस (व्यंग्य)
- पर्दे के राम और अयोध्या (व्यंग्य)
- प्रजावादी समाजवादी (व्यंग्य)
- प्रेम की बिरादरी (व्यंग्य)
- प्रेमचंद के फटे जूते (व्यंग्य)
- प्रेम-पत्र और हेडमास्टर (व्यंग्य)
- प्रेमियों की वापसी (व्यंग्य)
- पवित्रता का दौरा (व्यंग्य)
- पहला सफेद बाल (व्यंग्य)
- पिटने-पिटने में फर्क (व्यंग्य)
- पुराना खिलाड़ी (व्यंग्य)
- पुलिस मंत्री का पुतला (व्यंग्य)
- बकरी पौधा चर गई (व्यंग्य)
- बदचलन (व्यंग्य)
- बाएं क्यों चलें?
- बारात की वापसी (व्यंग्य)
- बुद्धिवादी (व्यंग्य)
- बैरंग शुभकामना और जनतंत्र (व्यंग्य)
- भगत की गत (व्यंग्य)
- भारत को चाहिए जादूगर और साधु (व्यंग्य)
- भारतीय राजनीति का बुलडोजर (व्यंग्य)
- भोलाराम का जीव (व्यंग्य)
- मुक्तिबोध : एक संस्मरण
- मुंडन (व्यंग्य)
- मैं नर्क से बोल रहा हूं ! (व्यंग्य)
- यस सर (व्यंग्य)
- रसोई घर और पाखाना (लघुकथा)
- रामकथा-क्षेपक (व्यंग्य)
- लघुशंका गृह और क्रांति (व्यंग्य)
- लंका-विजय के बाद (व्यंग्य)
- व्यवस्था के चूहे से अन्न की मौत (व्यंग्य)
- वह जो आदमी है न (व्यंग्य)
- वात्सल्य
- वैष्णव की फिसलन (व्यंग्य)
- शर्म की बात पर ताली पीटना (व्यंग्य)
- शॉक (व्यंग्य)
- सदाचार का तावीज़ (व्यंग्य)
- सन 1950 ईसवी (व्यंग्य)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

- संस्कृति (व्यंग्य)
- समझौता (लघुकथा)
- स्नान (व्यंग्य)
- सिद्धांतों की व्यर्थता (व्यंग्य)
- सुधार (लघुकथा)
- हम तो परभाकर हैं जी
- शिकायत मुझे भी है (व्यंग्य)
- व्यंग्य क्यों? कैसे? किस लिए? (भूमिका-तिरछी रेखाएँ)
- गर्दिश के दिन (आत्मकथ्य)
- गर्दिश फिर गर्दिश ! (आत्मकथ्य)

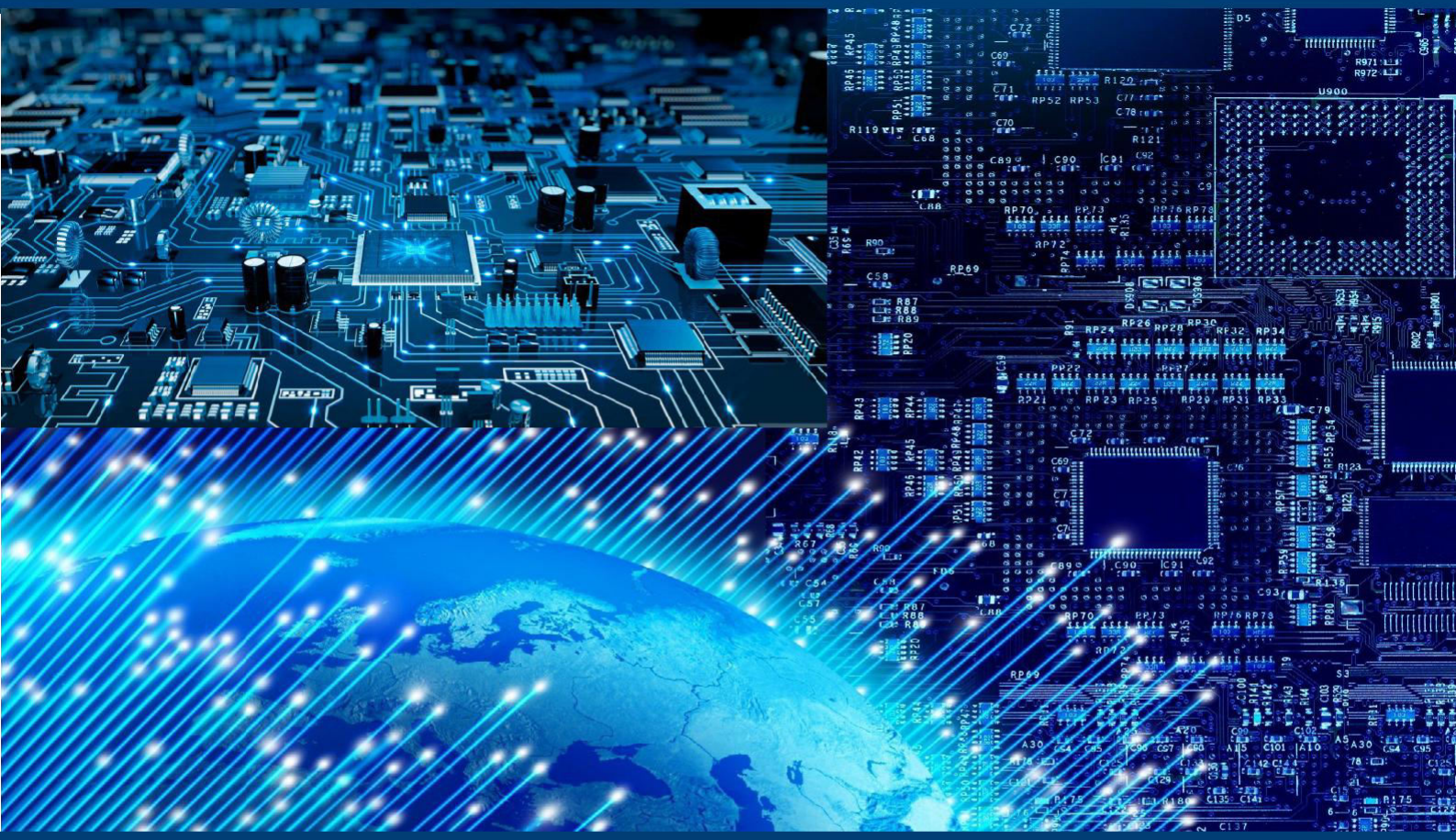

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |